देश-प्रेम

निबंध नंबर :- 01

देश-प्रेम का अर्थ – देश-प्रेम का अर्थ है-देश से लगाव | मनुष्य जिस देश में जनम लेता है, जिसमें निवास करता है, जिसका अन्न खाकर बड़ा होता है, उसके प्रति लगाव होना स्वाभाविक है |

देश-प्रेम में त्याग – सच्चा देश-प्रेमी के लिए अपना तन-मन अर्पित कर देना चाहता है | अमेरिका के देशभक्त राष्टरपति अब्राहिम लिंकिन ने देशवासियों को यही संदेश दिया था – "मेरे देश्वासियो ! यह मत सोचो कि अमेरिका ने तुम्हारें लिए क्या किया है | तुम यह सोचो कि तुमने अमेरिका के लिए किया है ?"

एक पवित्र भावना – देश-प्रेम एक पवित्र भावना है ; निस्वार्थ प्रेम है, दीवानगी है | भगतसिंह को देश-प्रेम के बदले क्या मिला फाँसी ! सुभाष को क्या मिला मौत ! गाँधी को क्या मिला गोली | फिर भी सारा राष्ट्र इन महापुरुषों के बलिदान पर नाज़ करता है | देश के लिए बलिदान हो जाने से बढकर संसार में और कोई गौरव नहीं है |

देश-प्रेमी का जीवन-देश के लिए – देश-प्रेमी के लिए सव्देश पर मर जाना ही एक ध्येय नहीं है | उसके जीवन का एक-एक शण देश-हित में लगता है | मुंशी प्रेमचंद लिखते है – "देश का उद्धार विलासियों के हाथ से नहीं हो सकता ; उसके लिए सच्चे त्याग होना चाहिए |"

देश-प्रेमियों की गौरवशाली परंपरा – भारतवर्ष देशभक्तों, संतों, महापुरषों का जनक है | यहाँ प्रारंभ से ही चाणक्य, चन्द्रगुप्त, शिवाजी, महाराणा प्रताप, तिलक, गोखले, मालवीय, आज़ाद, सुभाष आदि न जाने कितने महापुरषों ने बड़-चड़कर देश-प्रेम का परिचय दिया है | रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू आदि नारियों ने देश-प्रेम में प्रशंसनीय भूमिका निभाई है | प्रोयोगशाला में दिन-रात एक करने वाला वेज्ञानिक, घायल-पीड़ित देशवासियों को रोग से मुकित दिलाने वाला | चिकित्सक, देश के लिए बड़े-बड़े बाँध, ताप-घर, बिजली-घर बनाने वाला इंजिनियर; ठेकेदार; व्यापारी; मजदुर; कारीगर भी देश-प्रेमी है, अगर वह हर कम में देश

के गौरव को बढाने की बात सोचता है | देश को आगे बढाने की भावना से किया गया प्रत्येक कार्य देशभक्ति का पवित्र कार्य है |

देश-प्रेम-सर्वोच्च भावना – देश-प्रेम धन, दौलत, स्म्रीदी, सुख, वैभव-सबसे बड़ी भावना है | जैसे अपनी माँ गरीब, काली, करूप होते हुए भी सबसे प्यारी लगती है, उसी प्रकार अपने देश संसार भर की सुषमाओं से बढकर प्यारा लगता है |

देश-प्रेम की अनिवायर्ता – देश-प्रेम वह धागा है जिससे राष्ट्र के सभी मोती आपस में गुथें रहते है, सारे नागरिक देश से जुड़े रहते है | देश को कहीं भी चोट लगती है तो समूचे देश सिहर उठता है | अगर देशवासियों में प्रबल देश-प्रेम हो तो कोई विदेशी बुरी नजर से भारत को और आँख उठाकर नहीं देख सकता |

निबंध नंबर :- 012

देश–प्रेम

Desh Prem

नाम का अर्थ । भारतीय साहित्य में देश–
प्रेम का उल्लेख। प्राकृतिक सौंदर्य, देश के पनि समर्पण। देशवासी का कर्तव्य। निष्कर्ष।

“जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं।

हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।”

गुप्त जी की उपर्युक्त पंक्तियाँ किसी भी भारतीय के रक्त में देश-प्रेम का संचार करने के लिए काफी हैं। जननी जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है। भारतीय साहित्य में लिखित अनेक ऐसी पंक्तियाँ देश के प्रति हमारे स्वाभाविक प्रेम की दर्शाती हैं। वास्तव में जिस धरती पर हम जन्म लेते हैं, जिस पर पलकर बड़े होते हैं उसके प्रति स्नेह उत्पन्न होता ही जिसकी मिटटी से हमारा शरीर बना है, उसका ऋण हम कभी भी चुका नहीं सकते। यदि हम अपने देश की संस्कृति और परंपराओं को समझें, यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य में अपना मन रमाएँ, यहाँ के ज्ञान-वैभव को समझें तो निश्चय ही हमारे भीतर देश के प्रति लगाव और बढ़ेगा, देशुभक्ति की भावना को और बल मिलेगा। यह देशुभक्ति हमारे कर्मों और वाणी दोनों में

प्रकट होती है। देशुभक्त संकट काल में अपना सर्वस्व समर्पण करने को तत्पर रहता है, कोई भी ऐसा कार्य नहीं करता जिससे देश का नाम नीचा हो, अपने कार्यों से देश का गौरव बढ़ाता है। कभी अपने देश की निंदा नहीं करता, उसे औरों की तुलना में नीचा नहीं दिखाता। उसका प्रत्येक कार्य स्वार्थ हित न होकर देशोन्मुख होता है। यह हमारा कर्तव्य है कि धरती हमारा पालन-पोषण करती है उसके प्रति प्रेम को हम प्रदर्शित करें, उदार भावना को अपनाएँ और सबके हित को सोचें। वास्तव में हमें सर्वप्रथम राष्ट्र-हित के बारे में, फिर समाज के बारे में तथा अंत में स्वयं के हित में चिंतन करना चाहिए।